मिशन समाचार

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

वेदान्त आश्रम, इन्दौर में प्रतिदिन पूज्य गुरुजी के द्वारा प्रातः ७.०० बजे से श्री हनुमान चालीसा पर प्रवचन चल रहे हैं तथा प्रातः ८.३० और सायं ७.०० बजे श्री गंगेश्वर महादेव की आरती होती है। इसके अलावा वेदान्त आश्रम गुरुकुल में रशियन विदेकशी महिला के लिए वेदान्त का कार्स आरम्भ हुआ है। जिसमें पूज्य गुरुजी द्वारा अंग्रेजी भाषा में वेदान्त सार ग्रंथ का अध्ययन कराया जाता है, उसके अलावा ध्यान, संस्कृत तथा स्तोत्रपाठ़ भी सीखाया जा रहा है।

१३ दिसम्बर को कैलास आश्रम के पीठाधीश्वर, विद्वान, श्रोत्रिय–ब्रह्मनिष्ठ आचार्य, प.पूज्य स्वामी विद्यानन्द गिरीजी ब्रह्मलीन हो गए। उस निमित्त १४ दिसम्बर को उनको श्रद्धांजलि के रूप में श्री गंगेश्वर महादेवजी का रुद्राभिषेक किया गया। १५ दिसम्बर को पूज्य गुरुजी के जन्मदिन पर प्रातः श्री गंगेश्वर महादेव का रुद्राभिषेक किया गया। सायं श्री सलिल दाते का बांसुरी वादन, सोहम् दाते (बाल कलाकार) का तबलावदन तथा वृंदावन से आएं भजन गायकों के द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए। इसके अलावा अनेकों भक्तों ने अपने भजन की प्रस्तुति दी। तत्पश्चात् समस्त भक्तों ने पूज्य गुरुजी के दीर्घ एवं स्वस्थायु की कामना करते हुए भजन और प्रसाद का आनन्द लिया।

वेदान्त मिशन, अहमदाबादः– वेदान्त मिशन, अहमदाबाद द्वारा आयोजित पूज्य स्वामिनीजी का २६ नवम्बर से २ दिसम्बर तक का गीता ज्ञान यज्ञ का कार्यक्रम पूज्य गुरुजी की अस्वस्थता के कारण स्थगित किया गया। पूज्य गुरुजी को अस्वस्थता के कारण दि २२ से ३० नवम्बर अस्पताल में रहना पड़ा। परमात्मा की कृपा एवं समस्त भक्तों की शुभकामनाओं से पूज्य गुरुजी अब पूरी तरह से पुनः स्वस्थता को प्राप्त हो गए हैं।

वेदान्त मिशन, मुम्बईः– वेदान्त मिशन, मुम्बई द्वारा वेदान्त मिशन के आफिस पर प्रति रविवार को स्वाध्याय मण्डल में ६.३० से ८.०० बजे तक पूज्य गुरुजी के मुण्डक उपनिषद् के प्रथम अध्याय के द्वितीय खण्ड पर विड़ियो प्रवचन चला कर उस पर परिचर्चा होती हैं। आप सभी उसमें आमंत्रित हैं।

गीता ज्ञान यज्ञ (पूज्य स्वामिनीजी द्वारा)

दिनांक – ६ से १२ जनवरी २००८ **समय – सायं एवं प्रातः ७ से ८.३०**

विषय – माण्डूक्य उपनिषद् एवं गीता अ–६ **स्थान – रामकृष्ण मिशन केन्द्र, अहमदाबाद**

साधना शिविर (पूज्य गुरुजी एवं स्वामिनीजी द्वारा)

वेदान्त मिशन, मुम्बई द्वारा पूणे स्थित कोण्डवा में पुण्यधाम आश्रम में दिनांक २३ से २७ जनवरी तक एक साधना शिविर का आयोजन किया गया है।

इच्छुक साधक शीघ्र ही वेदान्त मिशन अथवा वेदान्त पीयूष के कार्यालय में सम्पर्क करें।

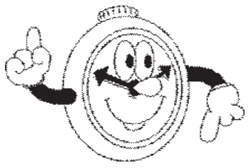

।। सर्वे भवन्तु सुखिनः।।
समस्त पाठकों को नववर्ष की शुभकामनाएं

–: शुभ कामनाओं सहित :–

1. Sh. P.H. Shah, Ahmedabad
2. M/S Punit Apparels Pvt. Ltd., Indore
3. M/S Samarpan Engg. & Mkt. Pvt. Ltd., Indore
4. M/S Rinku Plastics Products, Mumbai
5. M/S Pall Pharmalab Filtration Pvt. Ltd., Mumbai
6. M/S Elite Housing Developement Pvt. Ltd., Mumbai

–: वेदान्त पीयूष :–
स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक :- स्वामिनि अमितानन्द सरस्वती के लिये, तुलिका प्रिन्टिंग मन्दिर, ३४ ए ग्रीनलेण्ड कॉलोनी, स्नेहनगर, इन्दौर से मुद्रित एवं 'वेदान्त आश्रम', ई–२६४८.५० सुदामा नगर, इन्दौर से प्रकाशित।
सम्पादक :- स्वामिनि अमितानन्द सरस्वती Tel : 0731-2486055, 9302107229 ; E mail- info@vmission.org
आर.एन.आई. पंजीकरण संख्या – एम.पी/हिन्दी/२०००/१०६०६

हनुमान चालीसा

और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेई सर्व सुख करहिं।।

***हे** हनुमानजी! आपको छोड़कर किसी अन्य देवता का स्मरण करने की आवश्यकता ही नहीं लगती। क्योंकि आपकी सेवा ही समस्त सुख की प्राप्ति कराने वाली है।*

सनातन धर्म में अनेक विविध देवताओं की उपासना की जाती है। ये समस्त देवता एक ही परब्रह्म परमात्मा के विविध सामर्थ्यों की अभिव्यक्तियां हैं। इसलिए किसी भी रूप की आराधना पूर्ण निष्ठा के साथ की जाय तो उसका फल अवश्य ही प्राप्त होता है। ये समस्त शक्तियां सीमित सामर्थ्यों से युक्त हैं, अतः वे अपने सामर्थ्य के अनुरूप ही सीमित फल दे सकते हैं। किन्तु हनुमानजी समस्त सामर्थ्यों व शक्तियों और गुणों के धाम हैं। इसके अलावा समस्त ज्ञान व वैराग्य की निधि हैं। यह सर्वविदित है कि हनुमानजी को इन्द्र का वज्र लगने के उपरान्त उनके पिता पवन देवता के क्रुद्ध हो जाने पर समस्त देवताओं ने अपनी-अपनी शक्ति हनुमानजी को प्रदान करके वायु देवता को प्रसन्न किया था। हनुमानजी में उन समस्त शक्तियों को ग्रहण करने का सामर्थ्य भी था, एवं हनुमानजी समस्त प्रकार की शक्ति और बल से युक्त होने के कारण तथा प्रभु के अनन्य भक्त होने से करुणा के सागर भी हैं। ऐसे हनुमानजी की आराधना करने पर परमात्मा की एवं समस्त देवताओं की कृपा प्राप्त हो जाती है अतः अन्य के स्मरण की आवश्यकता ही नहीं रहती।

जो मुमुक्षु व जिज्ञासु साधक हैं, वह हनुमानजी को आदर्श की तरह स्थापित करके ज्ञान के लिए पात्रता उत्पन्न कर लेता हैं तथा अन्ततः ज्ञान को प्राप्त करके मुक्त हो जाता हैं, एवं हनुमानजी की आराधना से समस्त के कल्याण होते हैं।

श्री राम चरित मानस में प्रसंग आता है कि जब भगवान राम लंका की विजय के बाद अयोध्या वापस लौटते हैं। उनका स्वागत करने सारी अयोध्या उमड़ पड़ती है। प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि मैं भगवान राम के निकट पहुंच पाता तो कितना अच्छा होता। लेकिन श्रीराम अगर एक व्यक्ति हैं तो कुछ लोग ही उनसे मिल पायेंगे और लाखों लोग दूर हो जाएंगे। तुलसीदासजी बतातो हैं कि अयोध्या के जितने नागरिक थे, भगवान राम ने उतने रूप बना लिए और वे सब से मिले। जो बड़ा है, भगवान उसके चरणों में प्रणाम केरते हैं, जो छोटा है उसके सिर पर हाथ रखते हैं, जो बराबरी का है उसको गले लगाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति श्रीराम से मिलकर रस तथा आनन्द का अनुभव कर रहा है। भगवान प्रत्येक की भावना के अनुरूप रूप धारण कर लेते हैं। क्योंकि वे स्वयं तो निर्गुण निराकार ब्रह्म हैं। जिसक कोई रूप नहीं है, वह कोई भी रूप धारण करने में सक्षम होता है। जैसे जल का कोई आकार नहीं है अतः वह जिस पात्र में भी डालें उस पात्र के आकार का प्रतीत होता है। एवं वे किसी भी रूप में प्रस्तुत हो सकते हैं। इतना ही नहीं, प्रभु का रूप व गुण देखने वालों की दृष्टि और स्थिति पर भी निर्भर करता है, क्योंकि वे स्वयं तो अ़रूप ही है।

श्रीराम चरित मानस के अरण्यकाण्ड में एक और प्रसंग आता है कि जहां भगवान शंकर श्रीराम का वर्णन करते हैं कि वे मुस्कुराते हुए प्रसन्न भाव से बैठे हुए हैं और लक्ष्मणजी को कोई रसमयी कथा सुना रहे हैं। पर इस दोहे के बाद अगल पंक्ति कुछ भिन्न दृष्टि प्रस्तुत करती है। जहां नारदजी वहां आये हैं, और भवगान को विरह में आंसू बहाते देख उनके हृदय में अत्यन्त शोक हुआ। एक ओर भगवान शंकरजी की दृष्टि में श्री राम ईश्वर हैं, उनमें आनन्द छोड़ कर कुछ और नहीं हो सकता। इसलिये जब वे देखते हैं तो श्रीराम प्रसन्न दिखाई देते हैं। नारदजी ने भगवान को शाप दे दिया था कि आपने मेरा विवाह नहीं होने दिया, मुझे बड़ा दुःख पहुंचाया इसलिए आपको भी पत्नी के वियोग में रोना पड़ेगा। एवं भगवान शिवजी और नारदजी दोनों की दृष्टि में विलक्षणता दिखाई देती है। भगवान शंकर और नारदजी के श्रीराम एक होकर भी आलग-अलग प्रतीत होते हैं, क्योंकि दोनों के हृदय की मांग अलग-अलग हैं।

भगवान को हम जिस रूप में पाना चाहें, उनको हम उस रूप में ला सकते हैं। इस देश में, इस काल में, और इस क्षण में प्रत्येक व्यक्ति श्रीराम को अपनी इच्छा के अनुकूल पा सकता है। किसी को श्रीराम का मर्यादामय रूप प्रिय है तो किसी को उनका कृपामय रूप, किसी को शूरतामय रूप प्रिय है तो किसी को उनका कोमलता से भरा रूप, और किसी को उनका विलक्षण रूप भी प्रिय हो सकता है। अरूप, अगुण भगवान भक्त की प्रसन्नता हेतु उन उन रूप और गुणवान अभिव्यक्त मानों हो जाते हैं।

वेदान्त आश्रम, E / 2948-50, सुदामा नगर, इन्दौर - 452 009

पिछले श्लोक में महर्षिजी ने बताया कि जो योगी अज्ञान का नाश करके स्वस्वरूप को प्राप्त हो गया है, उस नष्ट मन वाले योगी के लिए कुछ भी करने वा न करने योग्य शेष नहीं रहता है। अब आगे के श्लोक में महर्षिजी बताते हैं कि ऐसे समस्या युक्त मन का नाश किस तरह से होता है।

दृश्यवारितं चित्तमात्मनः।
चित्त्वदर्शनं तत्त्वदर्शनम्॥ 16

अपने चित्त को दृश्य से परावृत्त करने पर, चित के तत्त्व, अर्थात अपनी चैतन्य स्वरूपता का बोध होता है। यह ही तत्त्व का दर्शन है।

उपदेश सार

मन में विद्यमान अज्ञान ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष का कारण होता है। अज्ञान का नाश 'एक' तत्त्व का चिन्तन कर उसका ज्ञान प्राप्त करने से ही होता है। यहां पर उसी 'एक' के चिन्तन का स्वरूप बताया जा रहा है।

मन अर्थात् चित्त। जिसमें अनेकों प्रकार की वृत्तियों का भान होता है। यह वृत्तियां सतत बदलती रहती हैं। कभी यह दृश्य पदार्थ विषयक होती हैं तो कभी भावनात्मक। यह समस्त वृत्तियां हम से पृथक् दृश्य रूपा है तथा हम उसके जानने वाले दृष्टा हैं। दृश्य में सतत परिवर्तन होता है, किन्तु उसको जानने वाला दृष्टा अव्यभिचारी सर्वथा समान बना रहता है।

इस श्लोक में दो मिलते जुलते शब्द के प्रयोग हुए हैं वे हैं, चित्त और चित्त्व। चित् अर्थात् चेतनता तथा चित्त्व अर्थात् चेतन स्वरूपता। चेतनता प्रकाश स्वरूप तत्त्व है। जिस प्रकाश में मन की विविध विषयक वृत्तियां प्रकाशित होती हैं। यह चेतनता जिस समय नाम-रूपात्मक पदार्थ के आकार की होती हैं, तो वह दृश्य विषयक वृत्ति बन जाती हैं, एवं चेतनता में नाम-रूप जुड़ जाने पर वह ही मन कहलाता है। जिस समय मन में किसी भी नामरूपात्मक पदार्थ की वृत्ति आती है, और चेतनता उस वृत्ति को प्रकाशित करती है, तब वह ही दृष्टा कहलाती है, एवं इस मन (चित्त) के यह दृष्टा और दृश्य रूप दो पहलू होते हैं। दृश्य में विविधता है तथा व्यभिचारी है। इसलिए दृश्य को मिथ्या जानना चाहिए। यह दृश्य को जब मिथ्या जानते है अर्थात् दृश्य से अपने चित्त को परावृत करते हैं, तब हम जो दृश्य की अपेक्षा दृष्टा कहलाते थे, उस दृष्टा का भी दृष्ट्त्व दृश्यवत् मिथ्या ही सिद्ध हो जाता है। तब जो रहता है वह प्रकाश मात्र ही है। वह ही चित् अर्थात् चेतनता है।

चित्त में से नाम-रूपात्मक जड़ का मिथ्यात्व निश्चय होने पर दृष्ट्त्व भी बाधित होकर अपनी चित् स्वरूपता में अर्थात् अव्यभिचारी प्रकाश स्वरूपता में जगते हैं। यह दृश्य से रहित चेतनस्वरूपता को जान कर उसमें स्थित होना ही तत्त्व का दर्शन होता है। अपनी दृष्ट्त्व आदि उपाधि को धारण कर स्वयं को सीमित मानकर संसारित्व को प्राप्त होते हैं। इनका मिथ्यात्व निश्चय करके स्वस्वरूप में स्थित होने से ही संसार के बंधन से मुक्त होते हैं।

अहंकार भूतकाल की स्मृतियों और भविष्य का आशाओं का गठ़री है। अतः अहंकारमय जीवन का अर्थ है, मृत क्षणों की श्मशान-भूमि अथवा काल के गर्भ में रहना जहां भविष्य अभी उत्पन्न ही नहीं हुआ है। इसमें व्यस्त रहकर वर्तमान समय को हम खो देते हैं, जो हमें कर्म करने और लक्ष्य पाने के लिए उपलब्ध होता है। वर्तमान में प्राप्त अवसर रूपी धन को गवां देते हैं। जिसके लिए भगवान कहते हैं कि संग का त्याग करके समत्व में स्थित होते हुए तुम कर्म करो।

वर्तमान की अग्नि में भूत, भविष्य, चिन्ता, आशा इन सब को जलाकर कर्म करना स्फूर्ति और प्रेरणा का लक्षण है। इस प्रकार अहंकार से रहित होकर कर्म करने में ही पूर्ण आनन्द है। ऐसे कर्म का फल सदैव महान होता है। जब अहंकार को भूलकर जो कार्य किये जाते हैं, उनमें कर्ता को यश अथवा अपयश की कोई चिन्ता नहीं रहती। क्योंकि फल की चिन्ता का अर्थ है, वर्तमान को खोना। जीवन का आनन्द वर्तमान के प्रत्येक क्षण में निहित होता है, तथा प्रत्येक क्षण का आनन्द स्वयं में परिपूर्ण है। अतः भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को जीवन की सभी परिस्थितियों में समान रहते हुए कर्म करने का उपदेश देते हैं।

अज्ञान की विनम्रता ही आत्मज्ञान के जिज्ञासु को जन्म देती है।

वेदान्त आश्रम, E / 2948-50, सुदामा नगर, इन्दौर - 452 009

॥ वेदान्त पीयूष ॥

मुख्य पृष्ठ | उपदेश सार | उपासना | सामान्य | मिशन समाचार

Postal Regd No : IDC/MP/966/2006-08 Indore मूल्य - रु १०/-, वर्ष -६ अंक-७२

आर.एन.आई. पंजीकरण संख्या - एम.पी/हिन्दी/२०००/१०६०६ जनवरी-२००८

अदर्शनादापतितः पुनश्चादर्शनं गतः। नासौ तव न तस्य त्वं वृथा का परिदेवना।।

यह भूत-संघ अदर्शन से आया और पुनः अदृश्य हो गया। न वह तेरा है और न तू उसका है, फिर व्यर्थ यह शोक किस लिए?

वेदान्त के द्वारा प्रतिपाद्य तत्त्व परमात्मा है। आज हमारी अपने बारे में जिस जीवत्व की भ्रामक धारणा है, उसको त्याग कर अपने परमात्म स्वरूप को जानना ही समस्त शास्त्र का प्रयोजन है। यह ज्ञान ही मुक्ति के लिए आपेक्षित है। जीव और परमात्मा के काल्पनिक भेद को समझने के लिए अनेकों प्रक्रियाएं बताई जाती है, जिसे वाद के नाम से जाना जाता है। विद्वज्जनों ने करुणा से प्रेरित होकर दो प्रकार के वाद के माध्यम से इसे समझना बहुत सरल बना दिया है। यह दो वाद हैं - १. बिम्ब-प्रतिबिम्ब वाद २. अवच्छेद वाद।

॥ बिम्ब प्रतिबिम्ब वाद ॥

बिम्ब-प्रतिबिम्ब वाद की प्रक्रिया के माध्यम से यह दर्शाया जाता है कि परमात्मा बिम्ब स्थानीय तत्त्व है तथा जीव मानो उसका प्रतिबिम्ब है। जैसे एक बाल्टी में जल विद्यमान है तथा उस जल में आकाश स्थित सूर्य प्रतिबिम्बित हो रहा है। यदि थोडी देर के लिए हम कल्पना करें कि प्रतिबिम्ब को अपने स्वस्वरूप का अज्ञान है, जिसके कारण वह सूर्य रूप अपने बिम्ब को नहीं जानने के कारण अपने आपको ही सब कुछ मान लेता है। जिस स्थान पर वह भासित हो रहा है, उस जल के धर्मों को अपना धर्म समझ लेता है। इसलिए यदि पानी मलिन होता है तो वह अपने अन्दर ही मलिनता की कल्पना कर लेता है। यदि पानी तरंगित होता है तो वह अपने आपको विक्षिप्त अनुभव करता है। पानी की सीमा वही है जो बाल्टी की सीमा है। अतः प्रतिबिंब भी स्वयं का दायरा उतना ही मान लेता है। जब बाल्टी से पानी प्रवाहित हो गया तो मानो उसका अन्त हो गया।

अब इस दृष्टान्त को दृाष्टान्त में घटाया जाय। बाल्टी स्थूल शरीर तुल्य है, तथा जल अन्तःकरण की तरह से है। आकाशस्थ सूर्य (बिम्ब) चेतन स्वरूप परमात्मा है। चेतन स्वरूप परमात्मा अन्तःकरण में प्रतिबिम्बित होते हैं अर्थात् चेतनता के समान कुछ लक्षण वहां आभासित होते हैं जिसे हम जीव की तरह जानते हैं। यह जीव का ही हमें अहं की तरह भान होता है। जीव की स्वतंत्र कोई सत्ता नहीं है किन्तु एक प्रतिबिम्ब होने की वजह से एक कल्पना मात्र ही है। जिसे अपने सत्य का ज्ञान नहीं है, इसलिए स्वयं को सर्वे सर्वा मानकर व्यवहार करने लगता है। इससे क्रमशः बुद्धि, मन, इन्द्रियां, प्राण, स्थूल शरीर आदि आभासित होकर चेतनवान प्रतीत होने लगते हैं। इस काल्पनिक जीव का इन सब से तादात्म्य होकर इन समस्त में 'मैं' बुद्धि का अनुभव होने लगता है। इसकी वजह से इसकी (देश, काल और वस्तुगत) सीमाओं को अपनी ही सीमाएं मान ली जाती है। जीव समेत सूक्ष्मशरीर का स्थूल शरीर में प्रवेश ही जीव का जन्म मान लिया जाता है तथा उसका त्याग ही मृत्यु मान ली जाती है, एवं अपने बारे में अपूर्णता की कल्पना होती है, उसके उपरान्त इस काल्पनिक अपूर्णता को दूर करने की चेष्टा होती है। जीव की इन्द्रियां आदि से तादात्म्य के कारण स्वाभाविक ही बाहर की और दृष्टि होती है, तथा इन्द्रियां के समान सत्ता वाले इस जगत को देखकर उसके प्रति सत्यता की बुद्धि होती है। अतः उससे प्रेरित होकर अपूर्णता की निवृत्ति का प्रयास बाह्य जगत के विषयों की प्राप्ति के माध्यम से करने का प्रयास होता है। इस तरह जीव संसारित्व को प्राप्त होता है।

इस संसार से छूटने के लिए अपने बिम्बस्थानीय सत्य परमात्मा को जानना ही एक मात्र उपाय है। जिस समय जीव को यह ज्ञान हो जाय कि उसका वास्तविक स्वरूप तो बिम्ब स्थानीय चेतनता ही है, इस जीव की अपनी कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है तो यह ही मुक्ति का ज्ञान है, एवं जीवभाव को काल्पनिक (मिथ्या) जानना तथा असीम परमात्मा को ही अपना सत्य जानने से समस्त बन्धन से मुक्ति हो जाती है।

लौकिक ज्ञान को पाने के बाद अपनी अल्पता का ज्ञान विनम्रता लाता है।

वेदान्त आश्रम, E / 2948-50, सुदामा नगर, इन्दौर - 452 009